कोरोना वायरस : प्रकृति का तांडव एवं मानव जीवन संहिता

श्याम मोहन अग्रवाल एवं सुमित्रा देवी शर्मा

Ikjk'k कोरोना वायरस ने संपूर्ण विश्व में अपना तांडव मचा रखा है। पूरी दुनिया में फैलती इस महामारी ने विशाल संकट खड़ा कर दिया है। जीवाणुरूपी इस दैत्य के हमले से चरमराई देशों की अर्थव्यवस्था को उबरने में ना जाने कितना समय लगेगा। हर विवेकशील देश को कोरोना जैसी आपात स्थिति से अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों से निपटने के लिए नए मॉडल पर काम करना होगा ताकि लोगों को तात्कालिक सहायता व रोजी-रोटी की उपलब्धता के पुख्ता इंतजाम हो सकें। इस त्रासदी का पूरे विश्व को पहला संदेश है कि हमारा पहला नंबर दुश्मन कोई देश, धर्म या किसी विचारधारा के अनुयायी न होकर कोरोना जैसी महामारी है जो धर्म, जाति, नस्ल अथवा नागरिकता के आधार पर नहीं सर्वत्र और सब पर तथा कभी भी आक्रमण कर सकती है। इससे बचाव सभी देश मिलकर ही कर सकते हैं। दुनिया के सभी देश विश्व स्वास्थ्य संगठन के माध्यम से इस बीमारी से संबंधित नवीनतम जानकारी तथा आंकड़ों का आदान-प्रदान कर समाधान निकालने में योगदान दे सकते हैं। किसी भी वायरस की उत्पत्ति के मूल में प्रकृति के साथ छेड़छाड़ ही रही है जो बाद में वीभत्स रूप ले लेती है। प्रकृति एक वरदान है हमें इसका सम्मान करना चाहिए क्योंकि मानव जीवन पूर्णतः प्रकृति पर ही निर्भर है। प्रकृति असंतुलन मानव जीवन के लिए आपदाओं का एक वीभत्स द्वार है जिसके मुहाने पर ना जाने कितने वायरस मानव सभ्यता का अंत करने के लिए खड़े हैं। आज आविष्कार, नवाचार की होड़ में इन्सान प्रकृति का मनमाने रूप में उत्खनन, प्रयोग करता जा रहा है। हमारे पूर्वजों, धर्मग्रन्थों, विद्वानों ने हमें समय-समय पर चेताया है कि प्रकृति के साथ अनुचित छेड़छाड़ सही नहीं है हमें इसका सम्मान करना चाहिए ना कि लगातार दोहन। वर्तमान समय में भी बहुत से विद्वानों द्वारा प्रकृति के साथ सामंजस्य पर जोर दिया जा रहा है ताकि मानव

जीवन सुरक्षित रह सके। आज कोरोना वायरस की वजह से दुनिया एक मुश्किल दौर से गुजर रही है। संघर्ष के इस समय में लेखक के द्वारा कुछ विद्वानों के विचारों का संकलन इस लेख में किया गया है। इस लेख में यह बताने का प्रयास किया गया है कि हमें मानव जीवन की रक्षार्थ प्रकृति की रक्षा और संरक्षण का दायित्व निभाना होगा।

कोरोना वायरस प्रकृति के संदेश को समझना जरूरी

नॉवेल कोरोना वायरस (सीओवीआइडी-19) के प्रकोप ने पूरी दुनिया में अभूतपूर्व स्थिति उत्पन्न कर दी है। संक्रामक रोग और महामारी फैलना, मानवजाति के लिए कोई नई बात नहीं है। फिर भी, इतने बड़े पैमाने पर इस प्रकार के वायरस का प्रकोप, हम सबके जीवन काल में एक नई घटना है। कोरोना पर राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द जी के विचार– मेरी संवेदना, इस वायरस के संक्रमण से जूझ रहे सभी लोगों तथा पूरी दुनिया में इसके शिकार हुए लोगों के परिवारों के साथ हैं। मेरी संवेदना उन डॉक्टरों, नर्सों, पैरामेडिकल, स्वास्थ्यकर्मियों तथा उन अन्य सभी लोगों के साथ भी है जो अपने जीवन को जोखिम में डालकर मानवजाति की सेवा कर रहे हैं।

इस महामारी ने हमें अन्य लोगों के साथ सम्मानजनक दूरी बनाए रखने के लिए विवश कर दिया है। अपने विवेक से अथवा चिकित्सकों द्वारा अनिवार्य किया गया एकांतवास, हमारी अब तक की यात्रा और हमारे भविष्य के मार्ग पर चिंतन-मनन करने के लिए एक आदर्श अवसर सिद्ध हो सकता है। आज के इस कठिन दौर से गुजरते हुए हमें इस चुनौती को एक अवसर में बदलना चाहिए और यह विचार करना चाहिए कि इस संकट के जरिए प्रकृति हमें क्या संदेश देना चाहती है। प्रकृति से हमें अनेक प्रकार के संकेत मिल रहे हैं, लेकिन इस लेख में कुछ ही पहलुओं पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है।

हम सभी जानते हैं कि इस संकट का सबसे स्पष्ट और पहला सबक है– साफ-सफाई। एहतियात बरतना ही, कोरोना वायरस की इस नई समस्या से निपटने का एकमात्र तरीका है और इसके लिए डॉक्टर यही सलाह दे रहे हैं कि *''सोशल डिस्टेन्सिंग''* के अलावा सभी लोग साफ-सफाई पर ध्यान दें। स्वच्छता और सफाई बनाए रखना, अच्छे नागरिक के मूलभूत गुणों में शामिल हैं। इन गुणों को कम महत्व दिया जाता रहा है। स्वयं महात्मा गांधी ने इन गुणों को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के लिए हम सबको प्रेरित किया था। साफ-सफाई और स्वच्छता, दक्षिण अफ्रीका और भारत में उनके ऐतिहासिक अभियानों के महत्वपूर्ण अंग रहे।

हम सभी के लिए अगला सबक यह है कि हमें प्रकृति का सम्मान करना चाहिए। मनुष्य ही, एकमात्र ऐसी प्रजाति है जिसने अन्य सभी प्रजातियों पर आधिपत्य जमा लिया है, पूरी धरती का नियंत्रण अपने हाथों में ले लिया है और यहाँ तक कि उसके

कदम चाँद तक पहुँच गए है। लेकिन विडम्बना देखिए कि इतनी शक्तिशाली मानवजाति इस समय एक छोटे से जीव यानि कोरोना वायरस के सामने लाचार है। हमें इस तथ्य को ध्यान में रखना होगा कि अंततोगत्वा, हम सभी मनुष्य जीवधारी मात्र हैं, और अपने जीवन के लिए अन्य जीवधारियों पर निर्भर है। प्रकृति को नियंत्रित करने और अपने लाभ के लिए सभी प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करने की तैयारियाँ, वायरस के एक ही प्रहार से तहस-नहस हो सकती हैं, और वायरस भी ऐसा जो माइक्रोस्कोप के बिना दिखाई भी नहीं देता।

हमें याद रखना चाहिए कि हमारे पूर्वज, प्रकृति को माँ का दर्जा देते थे। उन्होंने हमें सदैव प्रकृति का सम्मान करने की शिक्षा दी। लेकिन इतिहास के किसी मोड़ पर, हम उनके दिखाए मार्ग से हट गए और हमने अपने परंपरागत विवेक का परित्याग कर दिया। अब महामारियाँ और असामान्य मौसम की घटनाएँ आम होती जा रही है। समय आ गया है कि हम थोड़ा ठहर कर यह विचार करें कि हम रास्ते से कहाँ भटक गए, और यह भी कि हम सभी रास्ते पर कैसे लौट सकते हैं?

विश्व समुदाय के लिए समानता का सबक उतना स्पष्ट नहीं रहा है। लेकिन प्रकृति यह संदेश देती रही है कि उसके सामने हम सभी बराबर है। जाति, पंथ, क्षेत्र या अन्य किसी मानव निर्मित भेदभाव को वायरस नहीं मानता। तरह-तरह का भेदभाव पैदा करने और अपने-पराए के झगड़े में दुनिया लिप्त रहती है। फिर अचानक एक दिन कोई गंभीर जानलेवा खतरा हमारे समक्ष आ खड़ा होता है। तब हमें यह समझ में आता है कि मनुष्य के रूप में हमारी एक ही पहचान है– हम सब हर स्थिति में केवल और केवल इंसान है।

अपने संबोधनों और वक्तव्यों में प्रायः मैं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सद्विचार का उल्लेख करता हूँ; इसका का अर्थ है कि सम्पूर्ण विश्व, एक ही परिवार है। यह कथन, आज के संदर्भ में जितना सार्थक है उतना पहले कभी नहीं रहा। आज हमारे सामने यह स्पष्ट है कि हर व्यक्ति, एक दूसरे के साथ बहुत गहराई से जुड़ा हुआ है। हम सब वहीं तक सुरक्षित हैं जहाँ तक हम दूसरों की सुरक्षा का ध्यान रखते हैं। हमें केवल मनुष्यों की ही नहीं अपितु पेड़-पौधों और पशु-पक्षियों की सुरक्षा भी करनी है। असाधारण संकट प्रस्तुत होने पर ज्यादातर लोग स्वार्थी हो जाते हैं। लेकिन वर्तमान संकट हमें यह सिखाता है कि हमें अपने समान ही दूसरों की भी चिंता करनी चाहिए।

यह महामारी अति-संक्रामक है इसलिए लोगों को एकजुट करके, स्वैच्छिक सेवाएँ देने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जा रहा है। फिर भी, वायरस की रोकथाम और उन्मूलन के काम में लोग कई तरीकों से सहायता कर सकते हैं। जागरूकता बढ़ाने और घबराहट से बचाने में प्रत्येक नागरिक अपना योगदान दे सकता है। जो समर्थ है वे अपने संसाधनों को साझा कर सकते हैं– विशेषकर कम सुविधा सम्पन्न पड़ोसियों के साथ।

प्रकृति हमें यह याद दिलाना चाहती है कि हम पूरी विनम्रता के साथ, समानता व परस्पर-निर्भरता के मूलभूत जीवन-मूल्यों को स्वीकार करें। यह सबक हमें बहुत भारी कीमत चुका कर प्राप्त हुआ है। पर जलवायु संकट जैसी वैश्विक चुनौतियों का सामना करने तथा बेहतर व साझा भविष्य निर्माण में यह सबक हमारे लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।[1]

कोरोना की वजह से दुनिया में बदलाव

विभिन्न बीमारियाँ मानव प्रजाति के लिए हरदम समस्या रही है लेकिन कोरोना वायरस ने तो संपूर्ण विश्व को ही हिला दिया है। पूरी दुनिया में फैलती इस महामारी ने एक ओर तो मौजूदा संकट खड़ा किया है और साथ ही खतरे की घंटी भी बजाई है कि विकसित देशों सहित समूचा विश्व ऐसी बीमारियों का सामना करने के लिए तैयार नहीं है। यह आशा की जानी चाहिए कि रोगियों को अलग रखने, लॉकडाउन, अनुभव व अनुसंधान सहित चौतरफा उपायों से कोरोना काबू में आ जाएगा लेकिन जीवाणु रूपी इस दैत्य के हमले से चरमराई हमारी अर्थव्यवस्था को उभरने में ना जाने कितना समय लगेगा। हर विवेकशील देश को कोरोना जैसी आपात स्थिति से अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों से निपटने के लिए नए मॉडल पर काम करना होगा, जिसमें मंदी, घटती मांग और लॉकडाउन से बेरोजगार हुए लोगों तथा दिहाड़ी मजदूरों को तात्कालिक सहायता व रोजी-रोटी की उपलब्धता के पुख्ता इंतजाम हों।

आशा की जानी चाहिए कि कोरोना वायरस का आतंक अंततोगत्वा खत्म होगा लेकिन इसके बाद की दुनिया क्या होगी? क्या देश एक दूसरे के पहले की तरह नजदीक रहेंगे? लोगों की एक दूसरे से हाथ मिलाने और स्पर्श करने में रूचि रहेगी? क्या क्लास रूम की शिक्षा जारी रहेगी? हम सामाजिक और धार्मिक उत्सव मिलकर मनाया करेंगे? क्या चिकित्सा पेशे के जोखिम के चलते लोग अपने बच्चों को इस पेशे में खुशी से भेजेंगे? क्या भारत और अन्य देशों में स्वास्थ्य चुनावों से सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा बनकर उभरेगा? क्या एक देश से दूसरे देश में जाना अभी की तरह आसान होगा?

अन्तरराष्ट्रीय संबंधों में चीन और अमरीका के साथ राष्ट्रों का ध्रुवीकरण होगा। अमेरीका के इस आरोप में वास्तविकता प्रक्षलित होती है कि चीन ने सूचनाओं को अपने हित में छुपाने की आदत के अनुरूप अपनी अर्थव्यवस्था को बुरे प्रभावों से बचाने के लिए कोरोना से संबंधित सूचनाएँ छिपाई जिसकी कीमत पूरे विश्व को चुकानी पड़ी। दूसरी ओर चीन का आरोप है कि अमरीका उसके बढ़ते व्यापार से ईर्ष्यावश उसके विरूद्ध दुष्प्रचार कर रहा है। स्वास्थ्य सेवाओं पर अपने जीडीपी का 1.1 से 1.4 प्रतिशत खर्च करने वाले हमारे देश से लेकर 17 प्रतिशत खर्च करने वाले देश अमरीका तक को भी अपने रक्षा एवं अन्य बजट में कटौती कर स्वास्थ्य बजट को बढ़ाना पड़ेगा ताकि कोरोना जैसे संकट से निपटने के लिए लघु एवं दीर्घ दोनों तरह के उपाय किए जा सकें।

इस त्रासदी का पूरे विश्व को पहला संदेश है कि हमारा नंबर वन दुश्मन कोई देश, धर्म या किसी विचारधारा के अनुयायी नहीं होकर कोरोना जैसी महामारी है जो धर्म, जाति, नस्ल अथवा नागरिकता के आधार पर नहीं सर्वत्र और सब पर तथा कभी भी आक्रमण कर सकती है। इससे बचाव सभी देश मिलकर ही कर सकते हैं। दुनिया के सभी देश विश्व स्वास्थ्य संगठन के माध्यम से इस बीमारी से संबंधित नवीनतम जानकारी तथा आंकड़ों का आदान-प्रदान कर समाधान निकालने में योगदान दे सकते हैं।

दिसम्बर, 2019 के अंत से कोरोना वायरस के आक्रमण के बाद सिंगापुर और दक्षिण कोरिया ने ऐसी महामारी से बचने की अपनी सालों की तैयारी, अति उन्नत टेक्नोलॉजी और नागरिकों की नियमों व निर्देशों का पालन करने की प्रकृति से इसे समय रहते नियंत्रित कर लिया। इटली और ईरान ने इसकी गंभीरता को नहीं समझा और सबसे ज्यादा नुकसान उठाया। स्पेन सहित अधिकांश यूरोपीय देश भी अपने अति आत्मविश्वास के चलते इस परीक्षा में फेल हो गए। भारत में अपार जनसंख्या और सीमित संसाधनों के चलते यह आपदा कहाँ जाकर समाप्त होगी, यह कहना अभी मुश्किल है।

प्रश्न यह है कि कोरोना और भविष्य में होने वाली ऐसी इससे भी खतरनाक महामारी से क्या केवल लॉकडाउन, स्कूल कॉलेजों की छुट्टी, सामाजिक दूरी और घर से काम जैसे उपाय व्यावहारिक व प्रभावी सिद्ध होंगे?

कोरोना जीवाणुओं को मारने के लिए डॉक्टरों और नर्सिंग स्टाफ की सेना की जरूरत होगी। इससे स्वाभाविक है कि हमें न केवल मौजूदा अस्पतालों की क्षमता बढ़ानी होगी और नए अस्पताल खोलने होंगे तथा बड़ी संख्या में नए डॉक्टर व नर्स तैयार करने होंगे बल्कि मौजूदा को प्रोत्साहित कर उनका मनोबल ऊँचा रखने के लिए उन्हें भी सैन्य कर्मियों के जैसा सम्मान देना होगा।

संक्रमित व संदिग्ध लोगों को जानबूझकर लापरवाही से संक्रमण फैलाने से रोकने के साथ उनकी पहचान छुपाने के लिए सख्त कानून बनाने की जरूरत होगी। एक देश से दूसरे देश में प्रवेश से पूर्व यात्रियों के स्वास्थ्य की सम्पूर्ण स्क्रीनिंग की व्यवस्था करनी पड़ेगी ताकि कोई भी देश दूसरे देश के नागरिकों को अपने देश में प्रवेश देने से ना हिचकिचाएँ। भारत जैसे विकासशील देशों में कोई भी रोग सामान्यतः व्यक्ति की अपनी समस्या होती है लेकिन कोरोना जैसी जानलेवा एवं संक्रमणकारी बीमारी ने स्पष्ट कर दिया है कि यदि वे संक्रमित और गंभीर बीमारियों की रोकथाम में उपचार पर एकीकृत व सरकारी स्तर पर उपचार और रोकथाम का काम नहीं करेंगे तो सम्पूर्ण देश का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है।

कोरोना के दुष्प्रभाव से निपटने के लिए सभी देशों को विभिन्न प्रकार के वायरस पर शोध की गति को बढ़ाना होगा तथा चिकित्सा विज्ञान में टेक्नोलॉजी के प्रयोग में कई गुना वृद्धि करनी होगी। कोरोना के बाद की दुनिया मनोबल, अर्थव्यवस्था,

विश्वास और हैप्पीनेस सभी दृष्टियों से कमजोर होती नजर आ रही है। इस दुनिया को दोबारा स्वस्थ और खुशहाल बनाने के लिए नए सिरे से सभी देशों और समुदायों को नवीन और अर्थपूर्ण प्रयास करने होंगे।[2]

दुनिया के लिए नई शुरुआत का वक्त

पवन सुखदेव : भारतीय पर्यावरण अर्थशास्त्री और *ग्लोबल इनीशिएटिव फॉर ए सस्टेनेबल टुमॉरो (जिस्ट)* के संस्थापक और सीईओ हैं। वे संयुक्त राष्ट्र में पर्यावरण संबंधी मामलों के लिए गुडविल एंबेसेडर भी है। कोरोना संकट और प्रकृति के साथ हमारे संबंधों को लेकर नील किंग और गेब्रियल बरू ने डॉइचे वैली के लिए उनका साक्षात्कार लिया। पेश है इस साक्षात्कार के अंशः–

D;k dkjkuk ok;jl gekjh /kjrh dh ok lgt ifrfØ;k g! tk ge fu;f=r j[kus d fy, g\

केवल कोरोना वायरस ही नहीं बल्कि कहना चाहिए कि हमारी धरती पर वायरस का यह चौथा बड़ा हमला है। इससे पहले हम सार्स, एच-1 एन-1 और मर्स के हमले भी झेल चुके हैं। ये सभी वायरस जानवरों के माध्यमों से मानवी शरीर में आए हैं। इस आधार पर कह सकते हैं कि प्रकृति हमें कुछ इशारा कर रही है। शायद हमें नियंत्रण में रहने का संदेश दे रही हो।

इसमें कोई संदेह नहीं है पर्यावरण असंतुलन का हम ही मुख्य कारण है। हमने ही जंगलों को नष्ट किया है, हम ही नमी वाली जगहों को ढकते जा रहे हैं, हम ही जंगली जानवरों के संसार में घुसे हैं और हम उन्हें भोजन का हिस्सा बना रहे हैं। ऐसे में हो सकता है कि समूचा पर्यावरण तंत्र संतुलन स्थापित करने के लिहाज से अधिक वायरस छोड़ रहा हो।

dHkh vkiu dgk fd ge viu vkfFkd vkj dkjikjV ekMy dk l'kkf/kr dju dh t:jr gA rk fQj vki fdl rjg dh vFk0;oLFkk dh pkgr j[kr g\

यह एक चक्रीय अर्थव्यवस्था है। ऐसी अर्थव्यवस्था जिसमें मानव के धन बनाने की प्रक्रिया में मानव पूंजी, सामाजिक पूंजी और प्राकृतिक पूंजी की लागत नहीं लगती। दूसरे शब्दों में इसे ग्रीन या स्वच्छ और न्यायसंगत अर्थव्यवस्था कह सकते हैं। स्वच्छ इसलिए कहता हूँ क्योंकि इसमें पर्यावरण पर कोई विशेष भार नहीं पड़ता। न्यायसंगत इसलिए कहता हूँ क्योंकि यह सामाजिक रूप से संतुलित है। यह न बहुत अमीरों के लिए ही है और न ही केवल गरीबों के लिए।

कॉरपोरेट जगत वास्तव में इस तथ्य को नजरअंदाज कर देता है कि वे शेयरधारकों के लिए केवल पैसा बनाने वाली मशीन ही नहीं है बल्कि एक बड़ा संस्थान है क्योंकि वे सैकड़ों और हजारों लोगों को प्रशिक्षित कर रहे हैं। इस तरह वे मानव पूंजी सृजित कर रहे हैं। वे प्राकृतिक विध्वंस के इंजन बनकर कभी उत्खनन

में, तो कभी जंगलों को नष्ट करने में भी लग जाते हैं। इसके लिए कटाई करते हैं तो कभी धरती की खुदाई करते हैं। सवाल यह है कि क्या वे इन मामलों में कमी कर सकते हैं? क्या वे इस काम को बहुत ही दक्षता के साथ कर सकते हैं? क्या वे यह सब उन जगहों पर नहीं कर सकते जहाँ अस्तित्व में जैव विविधता अत्यंत दुर्लभ है? और अंत में, मैं यह पूछना चाहता हूँ कि वे सामाजिक ताने-बाने को बर्बाद कर रहे हैं, या उसका निर्माण कर रहे हैं?

yfdu D;k ,lk ugh g fd mudk Hkh ekx d vu:i mRiknu rk djuk gh gkrk g।

इसे साफ शब्दों में कहें तो यह पूछा जाना चाहिए कि क्या वे अपने आपूर्तिकर्ताओं, ग्राहकों और सरकार जिसे वे कर अदा करते हैं, के साथ सहयोग कर रहे हैं? क्या वे अधिकाधिक उत्पादन के लिए आपूर्तिकर्ताओं पर दबाव नहीं डाल रहे हैं? क्या वे अपनी आक्रामक रणनीति के जरिए ग्राहकों की मानवीय असुरक्षा का लाभ नहीं उठा रहे? और, यह भी कि क्या वे चाहतों को आवश्यकताओं में और आवश्यकताओं को मांग में और फिर मांग को उत्पादन में परिवर्तित नहीं कर रहे हैं? कया वे इस तरह से उत्पादित वस्तुओं से लाभ नहीं कमा रहे हैं।

मुझे लगता है कि ऐसे कॉरपोरेट को खुद को बदलना ही चाहिए। ऐसा नया कॉरपोरेशन जो ज्यादा जिम्मेदार हो और जो लाभ के साथ प्रकृति का भी ध्यान रखता हो। ऐसा कॉरपोरेशन जो अपने शेयरधारकों के हितों का ध्यान रखने के साथ-साथ अपने कर्मचारियों, समाज और आसपास के पर्यावरण का भी ध्यान रखता हो।

D;k ;g cgr vkn'koknh ugh g] ;g n[kr g, fd ekuo LoHkkor ykyph gkrk g।

बेशक हम लालची हैं लेकिन यह लालच कुछ नवीनता भी उत्पन्न करता है इसलिए यह पूरी तरह से बुरी बात भी नहीं है। लेकिन, कोई भी अनियंत्रित और बेलगाम नहीं हो सकता। इसलिए हमें नियंत्रण और संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है और यही हम नहीं कर रहे।

इस बात का ध्यान रखिए कि दुनिया केवल निजी धन अर्जन के बारे में नहीं है। पूरी दुनिया एक बाजार भी नहीं है। हमारे पास परिवार है, हमारे पास दोस्त हैं, हमारे पास समाज है, और हम उन्हें लाभ या हानि के तौर के संदर्भ में उनका मूल्यांकन नहीं कर सकते। और अक्सर हम उनके मूल्य को अलग-अलग तरीकों से मापते भी हैं। हमें ध्यान रखना चाहिए प्रकृति भी बहुत कुछ प्रदान करती है। हम उसकी आर्थिक लागत का अनुमान, उसकी सेवाओं को खो देने के आधार पर लगा सकते हैं। किसी भी वस्तु की कीमत लगाकर लाभ के लिए अंधी दौड़ मूर्खों का काम है और दुर्भाग्य से संसार में ऐसा कुछ ज्यादा ही हो रहा है। हमें समझना ही होगा कि हर चीज को पैसों में नहीं तोला जा सकता।

तो हम कैसे रुकेंगे?

ये यह गलत धारणा है कि निजी कंपनियाँ हमारी अर्थव्यवस्था के लिए भगवान के समान हैं। हम सभी अपने-अपने भाग्य के मालिक हैं। हम सभी आज के सही नेतृत्वकर्ता हैं। हमें बाजारों के जादू के आगे मंत्रमुग्ध नहीं हो जाना। हमें कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी को पूजना नहीं हैं। समझे कि वे आपके और हमारे जैसे लोग ही हैं। इस बारे में जागरूकता पैदा करें।

फिर, प्रभावों का आकलन शुरू करें। हमारे काम के दौरान समाज के लिए लागत, मानव स्वास्थ्य के लिए लागत का जैसे– जैसे आकलन हम करते जाएँगे, हम जीवन से नकारात्मकता को अलग करते जाएँगे, हम जीवन से नकारात्मकता को अलग करते जाएँगे, हमारे जीवन की दिशा बदलती जाएगी।

इसके बाद यह देखें कि हम क्या चाहते हैं और क्या नहीं चाहते हैं। यदि आप चाहते हैं कि वन्यजीवों के बाजार नहीं लगें तो इसके लिए नियम बनाएँ। देश बदलें और फिर देखिए कि बाजार भी किस तरह से बदलते और खुद को व्यवस्थित करते हैं। बहुत कठिन कार्य नहीं है यह।

cgrj Hkfo"; dk dyke e=*

आज दुनिया एक मुश्किल दौर से गुजर रही है। इससे उबरने के लिए देश-विदेश की सारी संस्थाएँ कई मोर्चों पर परस्पर सहयोग कर रही हैं। संघर्ष के इस समय में, पूर्व राष्ट्रपति और भारत रत्न डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम की यह बात मानवजाति के लिए एक मार्गदर्शक की तरह है कि यह धरती ही एकमात्र उपग्रह है, जहाँ जीवन संभव है, मानवजाति को इसकी रक्षा और संरक्षण का दायित्व निभाना ही होगा। उनका जीवन भी प्रकृति के संरक्षण की दिशा में हमें काफी कुछ सीख देने वाला है। उनकी पुण्यतिथि का इस अवसर पर रोजमर्रा के जीवन में उनकी बुद्धिमत्ता का स्मरण और अंगीकरण ही उस महान आत्मा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

27 जुलाई, 2015 को शिलांग में, भारतीय प्रबंधन संस्थान में *'क्रिएटिंग ए लिवेबल प्लेनेट अर्थ'* विषय पर उन्होंने विकास की जद्दोजहद में पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्र को हो रहे नुकसान के प्रति आगाह किया था। डॉ. कलाम ने सबसे पहले 2 नवम्बर, 2012 को चीन में पेइचिंग फोरम में इस ओर ध्यानाकर्षण किया था कि धरती को रहने योग्य बनाए रखना कितना जरूरी है। उन्होंने कहा था, 'हमें एक रमणीक धरा के लिए वैश्विक दृष्टि विकसित करनी होगी। मानवजाति के लिए इससे अधिक कल्याणकारी कुछ नहीं हो सकता।'

उनके इस स्वप्न को साकार करने के लिए यह आवष्यक है कि हम चीजों को दोबारा उपयोग योग्य बनाने, अपशिष्ट प्रबंधन, ऊर्जा दक्षता, धरती को रहने योग्य बनाने के प्रति लोगों को शिक्षित करने अथवा अन्य संगत कदम उठाने के लिए अपने प्रयास बढ़ाएँ, ताकि इस विश्वदृष्टि को अमलीजामा पहनाया जा सके।

आधुनिक समय की जटिलताओं के समाधान और भारत को 21वीं सदी का अग्रणी देश बनाने के प्रयास तेज करने के लिए हमें समस्या का समाधान करने की कला सीखनी होगी, ताकि वह विकराल रूप न धारण कर ले। समकालीन और भावी चुनौतियों का समाधान करने तथा भारत को विकासशील से विकसित देश बनाने की दिशा में मिसाइल मैन के नाम से प्रसिद्ध डॉ. कलाम के विचार राष्ट्र के लिए हमेशा प्रासंगिक बने रहेंगे। अंतरिक्ष विज्ञान एवं तकनीक क्षेत्र में उनका योगदान सदैव अविस्मरणीय एवं अतुलनीय रहेगा।[4]

कोरोना की लड़ाई को आसान बनाती है भारतीय जीवन पद्धति[5]

कोरोना से लड़ाई कठिन है लेकिन भारतीय प्राचीन परंपराओं/पद्धतियों को अपनाकर इस लड़ाई को आसानी से जीता जा सकता है। जानते हैं इसके बारे में–

शवाड़-सूतक/क्वारंटाइन – अपने यहाँ क्वारंटाइन प्राचीन काल से चला आ रहा है। इसे शवाड़ (सुतक) कहते हैं। प्रसव के बाद प्रसूता-शिशु को अलग कमरे में रखकर सेवा सुश्रुता की जाती है, क्योंकि दोनों की इम्युनिटी कम होती, वायरस-बैक्टीरिया से बचाव होता है।

प्राचीन सैनिटाइजर– यज्ञ, हवन-पूजन में धूप, घी, लोबान, गुगुल, काला तिल, चंदन, कर्पूर, लौंग आदि इस्तेमाल होता है। ये प्राकृतिक सैनिटाइजर हैं। घर के अंदर आने पर जूता-चप्पल बाहर निकालते थे। वहीं किचन में हर किसी का प्रवेश नहीं होता था। सूतक में भी ऐसे बचाव करते हैं।

सूर्यास्त के बाद खाना न खाएँ– हमारे भोजन में दही, दूध, घी, हरी और मौसमी सब्जियों को महत्व दिया जाता है। खाने में सभी षट्रस (मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कसाय) होते हैं। खाना सूर्यास्त से पहले ही खाने से संक्रमण से बचाव होता है। शरीर मजबूत होता, इम्युनिटी बढ़ती है।

प्रणाम से सोशल डिस्टेंसिंग– ब्रह्म मूहूर्त में उठते और योग-प्राणायाम करते हैं। शाम को जल्दी सो जाते हैं। शरीर के साथ मन और याद्दाश्त अच्छा रहता है। इम्युनिटी भी बढ़ती है। पैर छूकर प्रणाम या नमस्ते से सोशल डिस्टिंग होता है। संयुक्त परिवार में तनाव कम होता और मनोबल बढ़ता है। तनाव से इम्युनिटी घटती है। मनोबल कमजोर होने और एकाकी रहने से कई तरह का संक्रमण बढ़ता है। मनोव्याधियों से शरीर को ज्यादा नुकसान होता है।

संदर्भ

1. राजस्थान पत्रिका, *''कोरोना वायरस : प्रकृति के संदेश को समझना जरूरी''*, राजस्थान, जयपुर, 20 मार्च, 2020, पृ. 10।
2. राजस्थान पत्रिका, *''कोरोना से दुनिया में क्या -क्या बदलेगा''*, राजस्थान, जयपुर, 24

मार्च, 2020, पृ. 10, देवाशीष माथुर (गोवा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट में हेल्थ केयर प्रबंधन विषय का अध्यापन करते हैं।)।

3. राजस्थान पत्रिका, *''दुनिया के लिए नई शुरुआत का वक्त''*, राजस्थान, जयपुर, 13 जून, 2020, पृ. 6, पवन सुखदेव।
4. राजस्थान पत्रिका, *''बेहतर भविष्य का कलाम मंत्र''*, राजस्थान, जयपुर, 27 जुलाई, 2020, पृ. 6, अर्जुन राम मेघवाल (केन्द्रीय भारी उद्योग एवं लोक उद्यम और संसदीय कार्य मंत्री)।
5. राजस्थान पत्रिका, *''कोरोना की लड़ाई को आसान बनाती है भारतीय जीवन पद्धति''*, राजस्थान, जयपुर, 19 जुलाई, 2020, पृ. I, Health…., डॉ. रूपराज भारद्वाज (वरिष्ठ आयुर्वेद विशेषज्ञ, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।